



कथक (उत्तर भारत)



कथक (उत्तर भारत)



- ✧ इसका नाम 'कथिका' से लिया गया है
- ✧ उत्पत्ति: ब्रजभूमि की रासलीला
- ✧ संगीत, नृत्य तथा कथा का संयुक्त रूप
- ✧ मंदिर या गाँव की प्रस्तुति।
- ✧ कथक में राधा-कृष्ण की विषयवस्तु बहुत लोकप्रिय है।
- ✧ शास्त्रीय संगीत: उत्तर भारत (विशेष रूप से उत्तर प्रदेश)।
- ✧ कथक की शास्त्रीय शैली को 20वीं शताब्दी में लेडी लीला सोखे द्वारा पुनर्जीवित किया गया।
- ✧ हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय संगीत से संबद्ध शास्त्रीय नृत्य की एक मात्र शैली।

प्रस्तुति:

- ✧ भाव-भंगिमाओं तथा संगीत के साथ महाकाव्यों से ली गई कविताओं की प्रस्तुति।
- ✧ पद-चालनों पर अधिक जोर। इसमें अभिव्यक्ति तथा लालित्य को अधिक महत्त्व दिया जाता है।
- ✧ प्रायः एकल प्रस्तुति।

कथक प्रस्तुति के घटक

- | | |
|---|---|
| <ul style="list-style-type: none"> ✧ आनंद: परिचयात्मक प्रस्तुति। ✧ ठाट: हल्की किंतु अलग-अलग प्रकार की हरकतें। ✧ तोड़ा तथा टुकड़ा: तीव्र लय के लघु अंश। ✧ जुगलबंदी: तबलावादक तथा नर्तक के बीच प्रतिस्पर्धात्मक खेल। ✧ पढ़ंत: नर्तक जटिल बोल का पाठ कर नृत्य द्वारा उनका प्रदर्शन करता है। | <ul style="list-style-type: none"> ✧ तराना: समापन से पूर्व विशुद्ध लयात्मक संचालन। ✧ क्रमालय: समापनकारी अंश जिसमें जटिल तथा तीव्र पद-चालन का समावेश होता है। ✧ गत भाव: बिना किसी गायन के किया गया नृत्य। |
|---|---|

प्रसिद्ध प्रतिपादक

- ✧ बिरजू महाराज, लच्छू महाराज, सितारा देवी, दमयंती जोशी

वाद्ययंत्र

- ✧ तबला, पखावज, सारंगी, सितार



[और पढ़ें...](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/kathak-north-india>

